रामगंजमंडी, नगर वन, कोटा में वृक्षारोपण कार्यक्रम के लिए माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

हम सौभाग्यशाली है, जो हमें माँ चम्बल का आशीर्वाद मिलता है। भरपूर पानी मिलता है और हरियाली देखने को मिलती है। लेकिन आपको समझना होगा कि देश के कई हिस्सों में और हमारे प्रदेश के पश्चिमी हिस्सों में ऐसी भी स्थिति है, जहां हरियाली बहुत कम है। पेड़ दूर - दूर तक देखने को नहीं मिलते हैं। और जहां पेड़ कम होते हैं, वहाँ पानी भी कम होता है, फसल भी कम होती है और वहाँ की मिट्टी भी उपजाऊ नहीं होती है।

हमारे पूर्वजों ने हमें ऐसी धरती सौंपी थी, जो पूरी तरह हरी-भरी है। आज से 30 – 40 साल पहले का समय याद करो, तब कितनी हरियाली हुआ करती थी। तुलसी का पेड़ तो हर घर में हुआ करता था। नीम के पेड़ की दातुन लोग किया करते थे। पीपल, बरगद, नीम और तुलसी की पूजा होती थी। ये सब आज से 30 – 40 साल पहले की बातें हैं।

हमारी संस्कृति में इस बात पर विश्वास किया जाता है कि भगवान पेड़ में निवास करते हैं! घर में, मंदिरों में पेड़ों को जल से सींचा जाता है। पेड़ों को विरासत की तरह संभाला जाता है। हमारे संतों की वाणियों से लेकर संविधान तक में, पेड़ों की रक्षा और पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई है। ये अपने आप में अद्भुत है।

हमें यह समझना होगा कि प्रकृति को हमारी जरूरत नहीं है, बल्कि हमें प्रकृति के साथ की जरूरत है। हमारे पास सिर्फ एक दुनिया है जिसे भविष्य के लिए बचाकर रखना है। हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सम्पन्न प्रकृति दें, ताकि उनका जीवन भी हरा-भरा और समृद्ध हो।

आज का मनुष्य स्वार्थी हो गया है, टेक्नॉलजी में बंध गया है; और हम मानते हैं कि आज का मनुष्य आधुनिक हो गया है। अपनी परंपराओं को भूलना आधुनिकता नहीं होता। आधुनिक युग में हमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अनुसार चलना चाहिए, लेकिन अपनी विरासत, परंपरा और संस्कृति को लेकर चलना चाहिए।

आज दुनिया की जो सबसे बड़ी चिंता है, वह जलवायु संकट को लेकर है। आज दुनिया की सबसे बड़ी चिंता इस बात को लेकर है कि धीरे-धीरे पेड़ कम होते गए तो आने वाले भविष्य में क्या होगा ?

इंसान की गतिविधियों के कारण पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसें बढ़ती जा रही हैं। इससे तापमान में वृद्धि हो रही है। ग्लेशियर्स में बर्फ पिघल रही है, समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। साथ ही अभूतपूर्व मौसमी घटनाएं भी हो रही हैं। सबसे बड़ी बात यह कि इससे हमारे इकोसिस्टम में बदलाव आ रहा है।

एक बात मानकर चलिए, ये दुनिया या तो हरी रहेगी या नहीं रहेगी। लेकिन इन स्थितियों को सुधारा भी जा सकता है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए हमें स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों (ग्रीन एनर्जी) को अपनाना होगा। अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे, जंगलों को कटने से रोकना होगा और ऑर्गेनिक खेती, बिना केमिकल फर्टिलाइज़र के खेती की ओर बढ़ना होगा।

दिन-ब-दिन जिस तरह से मानवीय ज़रूरतें बढ़ रहीं हैं, पेड़ काटे जा रहे हैं, प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है; इन्हें देखते हुए अधिक से अधिक पेड़ लगाना न सिर्फ़ समय की आवश्यकता है, बल्कि ये हमारा उद्देश्य भी होना चाहिए। और मैं समझता हूँ कि गाँवों में तो फिर भी हम देखते हैं कि लोग प्रकृति प्रेमी होते हैं।

गाँव में तो खेत-खलियान, पेड़-पौधे होते ही हैं; मगर शहरी स्तर पर वृक्षारोपण आवश्यक रूप से मिशन मोड में होना चाहिए।

हम जब भी कोई वस्तु खरीदते हैं तो हम देखते हैं कि जैसे जैसेवो वस्तु पुरानी होती है, उसका उतना ही कम महत्व रह जाता है। लेकिन पेड़ों का ऐसा है कि पेड़ समय के साथ जितने घने होते हैं, उतनी ऑक्सीजन वातावरण में छोड़ते हैं।

सामूहिक रूप से मिलकर वृक्षारोपण करने से हमारे अंदर सहयोग और अपनत्व का भाव बढ़ता है, हमारी आपसी एकता बढ़ती है। जब सब लोग मिलकर पौधरोपण कर रहे हैं तो इससे

आने वाले दिनों में इन पौधों की देखभाल करना हम सबकी जिम्मेदारी होगी; और सब इसे निभाएंगे।

वृक्षारोपण के इस अभियान को हमने हाथ में ले लिया है। इस अभियान को जनांदोलन का रूप देने की ज़िम्मेदारी मैं आपको सौंपता हूँ। पेड़-पौधों का संरक्षण, पौधरोपण हमारी जीवनशैली का हिस्सा बन जाना चाहिए। विवाह, जन्मदिन के अवसर पर, त्योहारों के अवसर पर लोग जब एक दूसरे से मिलें तो भेंट के रूप में छोटा पौधा दे सकते हैं। ये एक हैबिट हो जाए।

सिर्फ़ कोटा-बूँदी ही नहीं बल्कि पूरे देशभर में ये विचार एक परंपरा की तरह स्थापित हो जाए; तब आप सोचिए कि हम पर्यावरण बचाने के लिए कितना बड़ा योगदान दे सकते हैं। हम प्लास्टिक के फूल नहीं बल्कि नए छोटे पौधे अगर एक दूसरे से मुलाकात करते हुए गिफ्ट के रूप में दें, तो ये बड़ा प्रभाव होगा।

आप सब एक बात ध्यान में रखें कि सिर्फ़ पौधरोपण करने से ही हमारी ज़िम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती। बल्कि इन पौधों की देखभाल और सार-संभाल भी हमें करनी होगी। आप सभी लोग ये निश्चित करें कि हम अपने-अपने क्षेत्र में, अपने घर और आसपास जहाँ ये पौधे लगाएंगे; वहाँ इनकी देखभाल हम करेंगे। कल को यहीं पौधें बड़े और घने वृक्ष बन जाएंगे तो अपने फल, लकड़ी, फूल-पत्तियां और सबसे बढ़कर प्राणवायु ऑक्सीजन हमें उपलब्ध कराएंगे। जीवों के लिए पेड़ कितने उपयोगी है, इसका वर्णन भी नहीं किया जा सकता।

आइए, हम सब शपथ लें, कि हम सब मिलकर व्यापक स्तर पर पौधरोपण का कार्य करेंगे। हम अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और घर-परिवार में सभी को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करेंगे।

हम व्यापक स्तर पर जन जागरूकता के माध्यम से सभी देशवासियों को प्रेरित करने का काम भी करेंगे। ये संकल्प हम लें।

आप सभी लोग आज के वृक्षारोपण महा अभियान में ज़िम्मेदारी के साथ अपना योगदान देने जा रहे हैं, इसके लिए मैं एक बार फिर आपको बधाई तथा शुभकामनाएं देता हूँ।